IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मालव नरेश विक्रमादित्य : एक परिचयात्मक अध्ययन

डॉ० वन्दना गुप्ता
सहायक आचार्य
प्राचीन इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर।

शोध–सार : प्रथम शदी में राजा विक्रमादित्य हुए जिन्होंने विक्रम–संवत का प्रवर्तन किया। भारत के इतिहास की अन्य विषयों की भांति विक्रमादित्य की भी महत्ता एवं लोकप्रियता को बाधित किया गया। विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता के विरोध में कुछ आपत्तियां प्रस्तुत की गयी जैसे उनके अस्तित्व पर प्रकाश डालने वाली पुरालेख एवं मुद्रा–परक प्रत्यक्ष सामग्री का अभाव एवं प्रारंभ में विक्रम संवत के साथ उनके नाम का असम्बन्ध होना। इन आपत्तियों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि विक्रमादित्य नाम का कोई भी व्यक्ति था ही नही अपितु यह एक कल्पना मात्र है, किन्तु यह सत्य प्रतीत नही होता इतिहास की अन्य विषयों की भाति इस विषय और इसके साक्ष्यों से भी बहुत छेड़–छाड़ किया गया जिसको जनमानस के बीच उजागर करना अति महत्वपूर्ण है, प्रस्तुत शोध–पत्र इसी विषय पर अनुसन्धान हेतु एक प्रयास मात्र है।

शब्द–कुंजी : *विक्रमादित्य, विक्रम–संवत, गाथासप्तशती, वृहत्कथा, वृहत्कथामंजरी, कथासरित्सागर, पुरातत्व, अभिलेख, मुद्रासाक्ष्य, पट्टावली।*

प्रस्तावना : विक्रमादित्य भारतवर्ष के अतीत के सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय पुरुष है। विदेशी आक्रमण के विरोध में उनके द्वारा देश की स्वाधीनता की रक्षा, उनका अनुपम न्याय–विवेक तथा साहित्य एवं कला के प्रश्रय में उनकी उदार–हृदयता ने उनके नाम को अमर बनाकर देश के जनमानस में प्रतिष्ठापित किया है। किन्तु प्राचीन भारत के बहुत से इतिहासकार विक्रमादित्य के अस्तित्व को स्वीकारने में संदेह प्रकट करते है। उनके अनुसार विक्रमादित्य के विषय में कोई ठोस ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध नही है और न ही ऐसे किसी साहित्यिक साक्ष्यों एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के द्वारा विक्रमादित्य की पुष्टि होती हैद्य जो कि पूर्णतः निराधार है इतिहास में कई ऐसे साक्ष्य मौजूद है जो विक्रमादित्य के अस्तित्व एवं उनकी ऐतिहासिकता का प्रमाण प्रस्तुत करते है। भारतीय इतिहास को संरक्षित और संवर्धित बनाये रखने के लिए जिनका विवरण वर्तमान के जनमानस के पटल पर प्रस्तुत करना अति महत्वपूर्ण हो गया है।

शोध–उद्देश्य : प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य इतिहास में मालव नरेश विक्रमादित्य से सम्बंधित विस्मृति को पुनः उजागर करने और उन्हें पुनर्स्थापित करना है। इसी क्रम में कुछ महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से मालव नरेश विक्रमादित्य से सम्बंधित ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुए विक्रम–संवत को पुनः उचित स्थान पर सुशोभित करने का प्रयास मात्र है।

शोध–प्रविधि : प्रस्तुत शोध–पत्र की प्रविधि प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। साथ ही ऐतिहासिक प्रमाणों का विश्लेषण करते हुए उन्ही की व्याख्या करके तथ्यों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

विक्रम–संवत का साक्ष्य : जैन ग्रंथों के अनुसार विक्रम संवत मालवा के शासक विक्रमादित्य द्वारा ५७ ई०पू० में शकों को पराजित करने के उपलक्ष्य में प्रवर्तित किया गया । उसका शासन सतयुग के समान सुख एवं समृद्धि से भरा हुआ था, अतः इस संवत को कृत या सतयुग संवत कहा गया।[1] मालवगण अथवा मालवा से सम्बंधित होने के कारण इसे मालव संवत नाम दिया गया। मालवा के लेखों में इसी संवत का प्रयोग मिलता हैद्य इस संवत के विषय में जैन ग्रंथो में बताया गया है कि महावीर के निर्वाण तथा विक्रम संवत के बीच ४७० वर्षों का अंतर था महावीर की निर्वाण तिथि ५२७ ई० पू० मानी जाती है तदनुसार विक्रम संवत की प्रारंभ की तिथि ५२७–४७०=५७ ई० पू० निर्धारित होती है। [2]

साहित्यिक साक्ष्य–भारतियों ने अपनी लिखित अनुश्रुतियों में विक्रमादित्य का संस्मरण तथा इतिहास संचित कर रखा है। जिनसे विक्रमादित्य के जीवन के सुविस्तृत तथा वास्तविक चित्रों की पूर्ति होती है। जो निम्नांकित है–

गाथासप्तशतीः—सातवाहन शासक हाल द्वारा रचित रचना गाथा सप्तशती विक्रमादित्य के विषय में सबसे प्राचीन लिखित ग्रन्थ है। इसके श्लोक में विक्रमादित्य का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि— "नायिका, जिसके चरण संवाहन से संतुष्ट है और जिसके हाथों में लक्ष विद्यमान है, तुम्हे विक्रमादित्य के आचरण का पाठ पढ़ाती है।"

टीकाकार गदाधर उपर्युक्त श्लोक की ब्याख्या करते हुए लिखते है कि— विक्रमादित्य के इस सन्दर्भ में संवाहन का अर्थ है शत्रुदलन तथा लखम का अर्थ है लाखों मुद्राएँ। विक्रमादित्य अपने शत्रुओं के परास्त होने से संतुष्ट होकर अपने सेवको के हाथ में मुद्राएँ देते है।[3] इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तत्कालीन समय में विक्रमादित्य नाम का राजा अपने विजयों तथा उदारता के लिए प्रसिद्ध था।[4]

वृहद्कथा— गुणाढय द्वारा रचित यह ग्रन्थ विक्रमादित्य के जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी देता है, साथ ही उसके अस्तित्व के प्रथम शती ई० पू० होने का प्रमाण भी देता है।[5]

वृहद्कथा मंजरी— कश्मीरी पंडित क्षेमेन्द्र द्वारा लिखित यह पुस्तक विक्रमादित्य से सम्बंधित एक आख्यान प्रस्तुत करता है[6] जिसके अनुसार निम्न ऐतिहासिक तथ्य प्रस्तुत होते है—

- विक्रमादित्य के पिता महेंद्रादित्य उज्जैन में शासन करते थे।
- विक्रमादित्य जब अवस्था पाकर बड़े हुए तब उन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों को हरा कर देश से बाहर किया।
- माल्यवंत नाम संभवतः मालव गण राज्य था जहाँ की प्रजा शैव थी।[7]

कथासरितसागर— सोमदेव द्वारा रचित इस ग्रन्थ से विक्रमादित्य के जीवन से सम्बंधित कई उद्धरणों का साक्ष्य प्राप्त होता है।[8] विक्रमादित्य के जीवन से सम्बंधित अंश कथासरित्सागर के १८वे लम्बक[9] में मिलता है जिससे निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत होते है :

- विक्रमादित्य के पिता का नाम महेंद्रादित्य तथा माता का नाम सौम्यदर्शना था।
- महेंद्रादित्य तथा विक्रमादित्य दोनों ने अवन्ती की राजधानी उज्जैनी पर शासन किया।
- उस क्षेत्र का प्रचलित धर्म शैव था।
- विक्रमादित्य के समय देश में विदेशी आक्रमण हुआ था।
- विक्रमादित्य ने अवस्था प्राप्त कर दुष्टों से देश को मुक्त किया दिग्विजय कर देश को एकछत्र शासन में आबद्ध किया।
- विक्रमादित्य अपनी वीरता शास्त्रविद एवं कला साहित्य के संरक्षक के रूप में और अन्य सद्गुणों से सम्पन्न थे जो एक आदर्श शासक के लिए अत्यावश्यक है।[10]

पुराणों का साक्ष्य— वंशानुचरित पुराणों का एक अभिन्न अंग माना जाता है, जिसमे आंध्रों के इतिहास का वर्णन करते हुए उनके समकालीन 6 वंशो का उल्लेख मिलता है जिनमे गर्धभिल्ल वंश को विक्रमादित्य से सम्बद्ध किया जाता है। ब्रह्माण्ड पुराण[11] में विक्रमादित्य के बारे में उल्लेख मिलता है। वायु पुराण[12] में विक्रमादित्य का दो बार स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है।

- भर्तहरी के वन जाने के बाद विक्रमादित्य ने निर्द्वन्द होकर अपने राज्य पर शासन किया।
- अन्य स्थान पर उनका जीवनवृत उद्धृत करते हुए लिखा गया है कि कलियुग के प्रारंभ होने के ३७१० वर्ष पश्चात् अवन्ती प्रदेश में प्रमर के वंश में विक्रमादित्य नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने शकों को नष्ट कर आर्य धर्म की पुनः संस्थापन किया। शिव के एक गण के रूप में विक्रमादित्य ने अवतार लिया उन्हें ३२ पुत्तलिकाओं से सुसज्जित एक सिंहासन दियाद्य उनकी सभा में वैताल नामक गण था। विक्रमादित्य ने भूमंडल को जीता और अश्वमेध यज्ञ किया।[13]

IJCRT

जैन साहित्यिक अनुश्रुतियाँ– जैनों के ऐतिहासिक तथा जीवन– वृतात्मक साहित्य में विक्रमादित्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। विक्रमादित्य की परंपरा को उन्होंने अपने साहित्य ग्रंथों में संचित कर रखा है।

पट्टावलीयों का साक्ष्य– इसमे महावीर के निर्वाण से लेकर मध्ययुग तक प्रसिद्ध राजवंशों तथा शासकों की श्रेणियों में विक्रमादित्य की तिथि स्पष्ट होती है। अवन्ती के इतिहास का उल्लेख करे हुए बताया गया है कि विक्रमादित्य ने ५७ ई० पू० से ६० वर्ष तक अपना शासन किया।[14]

जैन ग्रन्थ हरिवंश का साक्ष्य– जिनसेन द्वारा रचित इस ग्रन्थ में अवन्ती के इतिहास का तिथि क्रमिक वर्णन दिया गया हैद्य जिसके अनुसार गर्धभिल्ल वंश में विक्रमादित्य का जन्म हुआ।[15]

प्रभावक चरित का साक्ष्य– इसकी रचना प्रभाचन्द्रसूरी द्वारा की गयी। इस ग्रन्थ में जो उद्धरण प्राप्त होता है उससे निम्न निष्कर्ष निकलता है–

➢ उज्जैनी के शैव शासक का उत्तराधिकारी विक्रमादित्य था जिसने शकों को वहां से निकाल बाहर किया और देश को विदेशी अत्याचार से मुक्त कर अपना संवत चलाया।

➢ इसके बाद शांति और संवृद्धि का युग आया जो १३५ वर्ष तक रहा।[16]

इसके अतिरिक्त अन्य ग्रन्थ भी है जिनसे विक्रमादित्य के जीवन एवं उनकी सिद्धियों के विषय में जानकारी मिलती है जैसे–

➢ राजशेखर सुरिकृत प्रबंध–कोष।

➢ मेरुतुंग सुरिकृत प्रबंध–चिंतामणि।

➢ पुरातन–प्रबंध–संग्रह।

➢ इन्द्रसुरिकृत विक्रम–चरित।

➢ पूर्णचन्द्र सुरिकृत विक्रम–पञ्च–दण्ड–प्रबंध।

➢ देवमूर्ति का विक्रम चरित।

➢ क्षेमंकर कृत सिंहासन–द्वात्रिन्सिका।[17]

इन सभी ग्रंथों में विक्रमादित्य के अस्तित्व, पराक्रम के केंद्र अवन्ती,उनके कार्य स्वरुप एवं उनके उच्च जीवनादर्श को एक स्वर से स्वीकार करते है।[18]

पुरातात्विक साक्ष्य : पुरातात्विक साक्ष्यों के अंतर्गत विक्रमादित्य से सम्बंधित अभिलेखों एवं सिक्कों का प्रमाण प्राप्त होता है जो निम्न है–

1.**अभिलेखों का साक्ष्य–**

➢मंदसौर से प्राप्त दो अभिलेख जिनकी तिथि ४६३ तथा ५८६ मालव संवत हैद्य मालव गण में प्रचलित संवत का संकेत करते है।[19]

➢नन्द्साके यूप अभिलेख से स्पष्ट होता है कि मालव–गण कृत संवत का व्यवहार करते थे जो कि (मालव,कृत एवं विक्रम संवत) एक ही है। [20]

2. **मुद्रासाक्ष्य–** जयपुर राज्य की एक करद जागीर उनियर में भारत के पुरातत्ववेत्ता कारलाइल को छोटे छोटे बहुसंख्य सिक्के प्राप्त हुए जिन पर ब्राह्मी में 'मालवानाम जयः', 'मालवगणस्य जयः', 'जय मालवानाम' अंकित है[21] जिसका अर्थ है मालव गण की जय हो। ये लेख स्पष्ट रूप से यह तथ्य निर्धारित करते है कि सिक्कों का प्रथम प्रवर्तन अत्यंत भयंकर शत्रुओ पर मालवों की विजय के संस्मरण में चलाया गयाद्य अभिलेखों और सिक्कों के प्राप्ति स्थलों से यह निश्चित हो जाता है कि संवतप्रवर्तन और सिक्कों का संचालन एक ही घटना को समरोहित किया गया।

इस प्रकार उपरोक्त भारतीय साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर विक्रमादित्य के अस्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है जिससे प्राचीन भारत के ५७ ई० पू० में मालव प्रदेश में उनके भारतीय नायक होने, शक जैसे विदेशी आक्रांताओं

को परास्त कर भारत से बहार निकालने एवं विक्रम संवत का प्रवर्तन करने जैसी ऐतिहासिक घटनाओं की पुष्टि करता है। इसके अतिरिक्त भी अभी बहुत से तथ्यों को उजागर करने हेतु विभिन्न साक्ष्यों को आधार बनाकर अनुसन्धान करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

IJCRT

---

[1] अल्तेकर, ए० एस०, एपिग्रफिका इंडिका, भाग, २६, पृष्ठ , ११८–१२५।

[2] पाण्डेय, डॉ० राजबली. विक्रमादित्य, प्रकाशक, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, २०१३, पृष्ठ ३–४।

[3] राजा हाल, गाथा–सप्तशती, श्लोक, ५६४।

[4] पाण्डेय, डॉ० राजबली. विक्रमादित्य, प्रकाशक, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, २०१३, पृष्ठ १२।

[5] तत्रैव, विक्रमादित्य, पृष्ठ १५।

[6] क्षेमेन्द्र, वृहत्कथामंजरी, १०, १०८–११३।

[7] पाण्डेय, विक्रमादित्य, पृष्ठ –१६।

[8] सोमदेव, कथासरित्सागर, ६–६, ४–७, १२।

[9] सी० एच० टोनी, अनुवाद कथासरित्सागर,लंबक पृष्ठ –२०।

[10] पाण्डेय, विक्रमादित्य, पृष्ठ २०।

[11] ब्रह्माण्ड पुराण ७४, १७१–१७८ ।

[12] वायु पुराण ३७, ३५२–३५८ ।

[13] पाण्डेय, विक्रमादित्य, पृष्ठ–२३ ।

[14] विजय, मुनि दर्शन. श्री पट्टावली समुच्चय, भाग –१,पृष्ठ– १७,४६,१५०,१६६,१६६,२००,।

[15] जिनसेन, हरिवंश, ६०,४८७–४६०।

[16] पाण्डेय, विक्रमादित्य, पृष्ठ–२८–२६।

[17] पाण्डेय, पृष्ठ–३२।

[18] विक्रम तथा विक्रम–संवत २००१, ग्वालियर ।

[19] जे० □फ़०,फ्लीट. कार्पस इन्स्क्रिप्सन इन्दिकेरम, भाग–3

[20] एपिग्रफिका इंडिका, नन्द्सा यूप अभिलेख, भाग–२७ ।

[21] अर्किओलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडियन रिपोर्ट, भाग ६, पृष्ठ– १६०– १८३।